[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3482

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

ताल वाद्यों में तबला वाद्य के पश्चिमी बाज का दिल्ली घराना अधुनातन प्रयोग एवं प्रवृत्तियाँ

प्रो. शर्मिला टेलर
एसोसिएट प्रोफेसर (संगीत)
अनुजा
शोधार्थी (संगीत)
वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (राज.)

संगीत में ताल का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। अगर देखा जाए तो ताल में ही पूरा संगीत जगत समाया हुआ है। अगर संगीत में ताल न हो तो संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। संगीत की वह तीनों विधाएं जिससे मिलकर संगीत बना है। गायन, वादन, नृत्य इनको समान रूप में चलाने का कार्य ताल ही करती है। ''ताल संगीत का अभिन्न अंग होने के साथ ही आनन्दोत्पत्ति का सबल माध्यम भी है। ताल विभिन्न लयकारी के रूप से संगीत में प्रयुक्त होकर रसानन्द को चरमोत्कर्ष पर पहुंचाता है। जिस प्रकार गायन में विभिन्न रागों का वर्णन मिलता है। इसी प्रकार ताल में भी विभिन्न लयकारी वाले तालों का वर्णन मिलता है, कहीं समान कहीं असमान कहीं दुगुन, तिगुन, आड, कुआड आदि भिन्न–भिन्न प्रकार की लयों का प्रदर्शन ताल के माध्यम से दर्शाया जाता है।

ताल शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के 'तल' धातु से हुई है। ताल को दर्शाने के लिए चार प्रकार के ताल वाद्यों का प्रयोग किया गया है–तत् वाद्य, सुषिर वाद्य, घन वाद्य, अवनद्ध वाद्य।

अवनद्ध वाद्यों का प्रयोग पूर्ण रूप से ताल देने के लिए किया जाता है। ऐसे बाज जिनके मुख चर्म से आच्छादित होते हैं और उसे चमड़े पर प्रहार से ध्वनि उत्पन्न की जाती है। उन्हें अवनद्ध कहा जाता है। ''अवनद्ध शब्द मूलतः संस्कृत भाषा का शब्द है। यह 'नह' धातु से प्रत्यय लगाकर बना है। 'नह' धातु के तीन अर्थ है– प्रथम– बाँधना, दूसरा– चारों तरफ से लपेटना, तीसरा चारों तरफ से करना, इन तीनों अर्थों के अनुसार नद्ध का अर्थ, बंधा हुआ, मढ़ा हुआ, लपेटा हुआ या कसा हुआ होता है। इसी नद्ध शब्द के साथ अब उपसर्ग के योग से अवनद्ध शब्द बना है। अव का अर्थ होता है फैलाव या विस्तार। अवनद्ध वाद्यों का प्रयोग अत्यन्त प्राचीन काल से होता रहा है। भारतीय संगीत में प्रयुक्त होने वाले लोकप्रिय एवं बहुउपयोगी ताल वाद्य – तबला वाद्य को सर्वोच्चतम स्थान दिया गया है। वर्तमान संगीत जगत में अवनद्ध वाद्यों में सर्वाधिक विशिष्ट तथा महत्वपूर्ण स्थान तबले का है।

तबले का आविष्कार 13 शताब्दी में दिल्ली के हजरत अमीर खुसरो ने किया। तबले का प्रयोग संगत या एकल वादन दोनों के लिए ही समान रूप से किया जाता है। प्राचीन काल से तबल वाद्य का प्रयोग केवल संगत के लिए ही लिया जाता था परन्तु शनैः–शनैः समय परिवर्तित हुआ और एकल वादन के लिए तबला वादन शैली को घरानों में विभाजित कर दिया गया। इस विभाजन से छः घरानों का जन्म हुआ। दिल्ली घराना, अजराड़ा घराना, लखनऊ घराना, फर्रूखाबाद घराना तथा बनारस घराना। ''इसके अतिरिक्त एक घराना और प्रतिष्ठित हुआ जो अपने आप में स्वतन्त्र घराना है। जिसका विकास भी इन घरानों से अलग ही हुआ। इसका उक्त घरानों से किसी प्रकार भी सम्बन्ध नहीं है और वो है पंजाब घराना।'' शेष घरानो को दो बाजों में विभाजित कर दिया गया। पूर्वी बाज व पश्चिमी बाज। पूर्वी बाज के अन्तर्गत लखनऊ घराना फर्रूखाबाद घराना बनारस घराना इत्यादि आए और पश्चिमी बाज के अन्तर्गत दिल्ली घराने और अजराड़ा घराने को रखा गया है। सभी घरानों में पश्चिमी बाज का दिल्ली घराना बहुत ही मशहूर है। पश्चिमी बाज के दिल्ली घराने की स्थापना उस्ताद सिद्धार खां ने की। उस्ताद सिद्धार खाँ दिल्ली के निवासी थे। अतः इनका बाज दिल्ली या दिल्ली घराना कहलाया ''जो काम पखावज से पंजे के किया जाता है वह इस बाज में अंगुलियों के द्वारा किये जाने लगा बोलों में भी आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर लिया गया।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

तबले का दिल्ली घराना और गुरू शिष्य परम्परा

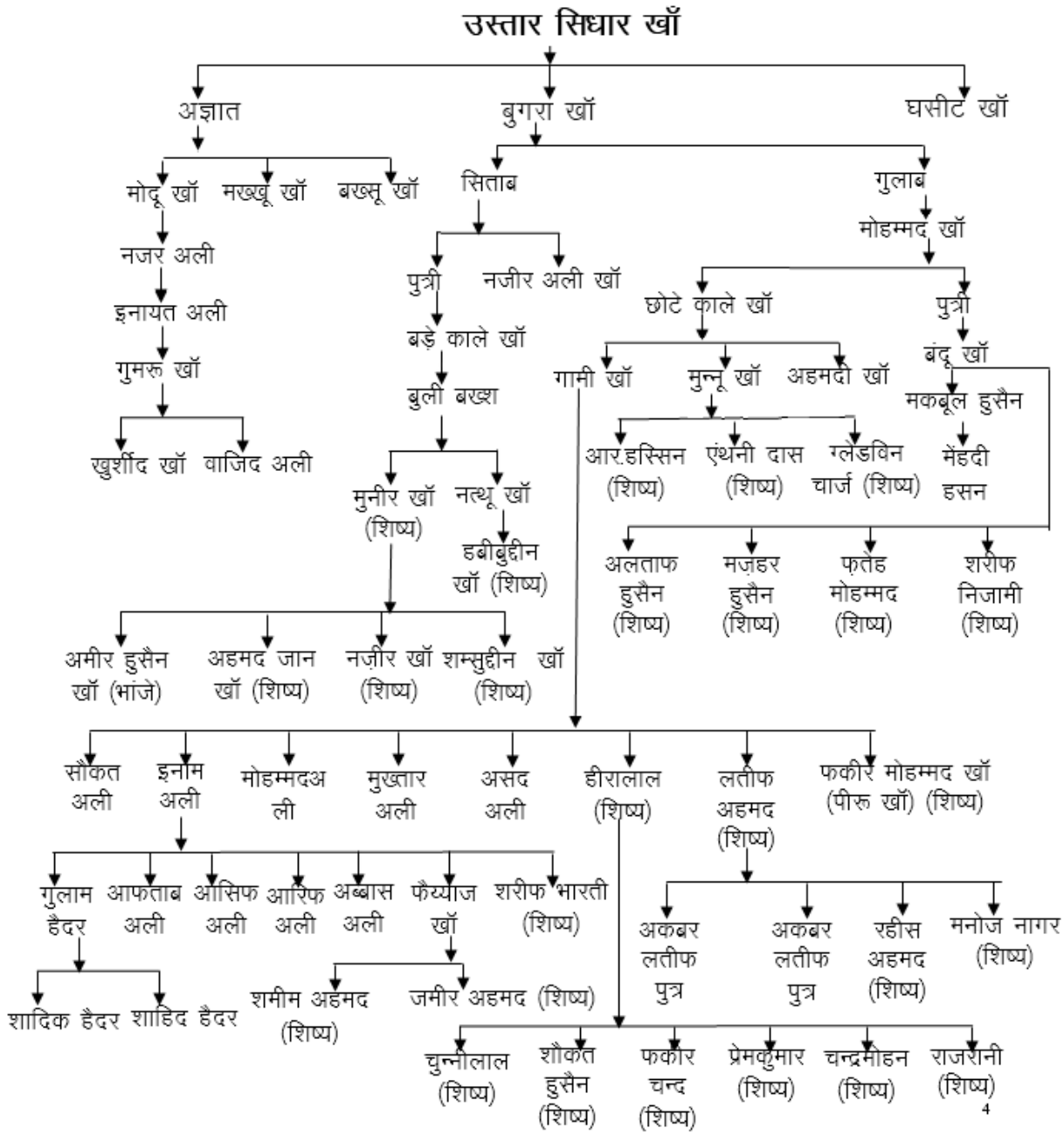

पश्चिमी बाज के दिल्ली घराने की वादन शैलियाँ

''किसी भी प्रायोगिक कला के प्रस्तुतिकरण का विशिष्ट ढंग उस कला की शैली कहलाता है। कला का प्रायोगिक पक्ष जब एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में परम्परागत रूप से चलता रहता है तो उसका निरन्तर परिष्कार और संस्कार होता रहता है। आगे चलकर जब यह प्रायोगिक पक्ष परिष्कृत और सुसंस्कृत होकर जनमानस में प्रतिष्ठित हो जाता है तो वह एक विशिष्ट शैली के रूप में रूढ हो जाता है। दिल्ली घराना स्वतंत्र तबला वादन का आद्य घराना है। दिल्ली बाज को चाँटी का बाज या दो

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

अंगुलियों के नाम से मशहूर बाज भी मानते हैं। दिल्ली बाज अत्यन्त कोमल बाज माना जाता है। दिल्ली बाज में चाँटी पर तर्जनी और मध्यमा इन दोनों अंगुलियों का इस्तेमाल करके अति से अति द्रुत लय में कायदे व रेले बजाए जाते हैं। इन दोनों अँगुलियों के द्वारा बजाए गए कायदे व रेले स्पष्ट एवं जोरदार रूप से सुनाई पड़ते हैं। इसीलिए ये दिल्ली बाज की एक प्रमुख विशिष्टिता है। यह बाज अपनी विशेषताओं के लिए जाना जाता है। दिल्ली घराने मे कायदे रेले पेशकारे हमेशा ही चाँटी या किनारी पर बजाए जाते हैं। ''इनके वादन में दो अँगुलियों द्वारा बजने वाले इन बालों को खासतौर पर उपयोग किया जाता है। धिट, तिट, किट, धा, ता, धागे, तागे, धागेन, तागेन, धिना, गिना, धिनगिन, तिनकिन आदि। चतुरश्र जाति में रचित कायदे दिल्ली बाज की एक और विशेषता है।

पश्चिमी बाज के दिल्ली घराने की प्रमुख प्रवृतियाँ

हाथों तथा भिन्न–भिन्न अँगुलियों के प्रयोग से तबले पर जो विभिन्न वर्णों को बजाया जाता है उसे बाज कहते हैं।दिल्ली घराने की तबला वादन– शैली निजी एवं मूल रूप से दिल्ली में विकसित हुई। इसीलिए इसे दिल्ली बाज के नाम से जाना जाता है। ''दिल्ली घराना तबले का आदि घराना है। तबला का सर्वप्रथम घराना होने का श्रेय प्राप्त होने का कारण दिल्ली घराना अपनी निजी एवं भौगोलिक विशेषताओं के कारण तबले के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस घराने में सर्वप्रथम पेशकार, कायदा, कायदा पेशकार, कायदा रेला, रेला मुखड़ा, मोहरा एवं छोटे–छोटे टुकड़े, जगत, त्रिकोणीयगत लग्गी, लड़ी विशेष रूप से बजाए जाते हैं। इन विभिन्न प्रकार के बन्दिशों से बजाए जाते हैं। इन विभिन्न प्रकार के बन्दिशों का समावेश दिल्ली बाज में चार चाँद लगा देते हैं।''

पेशकार

स्वतन्त्र तबला वादन (सोलो) को प्रारम्भ करने के लिए सर्वप्रथम पेशकार को बजाया जाता है पेशकार को मध्यलय में बजाकर नगमा दे रहे संगतकर्ता को अपनी लय समझाई जाती है। दिल्ली घराने के विद्वान ही पेशकार का शुद्ध प्रयोग कर पाते हैं। उदाहरण के लिए दिल्ली बाज का तीन ताल में पेशकार –

''धिंक्र		धिंता	ऽधा	धिंता		।	धाती		धाती		धाधा		धिंता		
×							2								
तिंक्र		तिंता	ऽता	तिंता		।	धाती		धाती		धाधा		धिंता।		
0							3								

कायदा

दिल्ली बाज में पेशकार बजाने के पश्चात् कायदा बजाने की परम्परा मानी जाती है। कायदे को पहले मध्य लय में उठाकर फिर धीरे–धीरे लय को बढ़ाया जाता है। एक बार लय बढ़ जाये तो फिर चाहे कितनी ही लय में इसे बजाया जा सकता है। उदाहरण के लिए तीन ताल में दिल्ली घराने का प्रसिद्ध कायदा

''धागे	तिरकिट		धागे	तिरकिट		।	धागे	तिरकिट		तिना		किना			
×							2								
ताके	तिरकिट		ताके	तिरकिट		।	धागे	तिरकिट		धिना		गिना।			
0							3								

रैला

रेला जैसा कि हमें नाम से ही स्पष्ट हो रहा है कि तबला वादन की वह रचना जो रेल गाड़ी की तरह आते तीव्र गति में एंव डगमगाती हुई चले रेला कहलाती है। रेला प्रदर्शन में हाथ की सफाई सौन्दर्य एवं निरन्तरता का जितना ध्यान रखा जाए उतना ही रेला वादन चमत्कारी एवं प्रभावशाली होता है।

उदाहरण के लिए दिल्ली घराने का रेला

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

´´धाती	धाडतिर	किटतक	धाती	।	धाडतिर	किटतक	धाडतिर	किटतक
×					2			
ताती	ताडतिर	किटतक	ताती	।	धाडतिर	किटतक	धाडतिर	किटतक।
0					3			

गत

गत यह स्वतन्त्र तबला वादन का एक विशिष्ट प्रकार है। वादन शैली के अनुरूप मुलायम बोलों की ऐसी रचना जो तिहाई रहित होती है उसे गत कहते हैं। दिल्ली घराने की त्रिकोण गत की बंदिश इस प्रकार है। इस गत के बोल इस प्रकार रखे जाते हैं कि देखने से यह प्रतीत होता है कि मानो कोई त्रिकोण वस्तु रख दी हो इसे त्रिकोण गत कहते हैं।
उदाहरण के लिए तीन ताल की त्रिकोण की बंदिश –

नगिन तेटे तेटे धिन धे धे नग ननाना तेटे तेटे धागेना तीना कता नाना तीनक तीनक नाती नाना धिनक धिनक धेनाना ना धे धे नगेनाना धेना धेनाना ना धे
ना

प्राचीनकाल में पश्चिमी बाज के दिल्ली घराने में चक्रदार फरमाइशी चक्रदार कमाली चक्रदार लग्गी लड़ी आदि का प्रयोग नहीं किया जाता था। क्योंकि इन रचनाओं का प्रयोग पूर्ण रूप पूर्वी बाज के घरानों में किया जाता है। परन्तु आधुनिक काल में इन सभी रचनाओं का प्रयोग दिल्ली घराने में किया जाने लगा है। परन्तु दिल्ली बाज में ये सब रचनाएँ दिल्ली घराने के बोल समूह व दो अँगुलियों के प्रयोग से ही बजाया जाता है। उदाहरण के लिए पश्चिमी बाज के दिल्ली घरान में तीन ताल की लग्गी–

´´धाती	घेना	धाती	घेना	।	धाती	धागे	तिना	केरा
×					2			
ताती	केना	ताती	केना	।	धाती	धागे	धिना	गिन।
0					3			

संदर्भ –

1 *प्रमुख ताल वाद्य पखावज तथा तबले की विभिन्न परम्पराएँ – वर्मा, डॉ. मोहिनी, पृ.सं. 13*
2 *अवनद्ध वाद्य सिद्धान्त एवं वादन परम्परा – शर्मा, डॉ. महेन्द्र, 'बम्ब', पृ.सं.5*
3 *तबले के प्रमुख घराने वादन शैलियाँ एवं बंदिशे – डॉ. सुदर्शन राम, पृ.सं.40*
4 *दिल्ली घराने की संगीत परम्परा और उस्ताद चाँद खाँ – डॉ. भारती नयन, पृ.सं.180*
5 *तबले के प्रमुख घराने वादन शैलियाँ एवं बंदिशे – डॉ. सुदर्शन राम, पृ.सं.46*
6 *तबले के प्रमुख घराने वादन शैलियाँ एवं बंदिशे – डॉ. सुदर्शन राम, पृ.सं.48*
7 *ताल मार्तण्ड – सत्यनारायण वशिष्ठ, पृ.सं. 45*
8 *ताल मार्तण्ड – सत्यनारायण वशिष्ठ, पृ.सं. 47*
9 *ताल शास्त्र का सैद्धान्तिक पक्ष – गुप्ता निशी, पृ.सं. 135*
10 *तबले के प्रमुख घराने वादन शैलियाँ एवं बंदिशे – डॉ. सुदर्शन राम, पृ.सं.69*
11 *तबले के प्रमुख घराने वादन शैलियाँ एवं बंदिशे – डॉ. सुदर्शन राम, पृ.सं.68*